अक्षय निधि

10	44	23
68	129	52
131	49	129

नियम

> यदि किसी व्यक्ति को सम्यग्दर्शन / सम्यग्दर्शन / सम्यक्चारित्र / अनंत चतुष्टय इन मे एक प्राप्त हो जाता, फिर वह व्यक्ति मोक्ष को ही प्राप्त कर सकता है

> यदि यहाँ से बोला गया शब्द आपके Card में हो, उस शब्द के साथ बोले गये पंक्ति को लिख ले और याद कर ले

(i) > इस Card मे पाँच पड़ाव है

* प्रथम पड़ाव का नाम सम्यग्दर्शन
* द्वितीय " सम्यग्ज्ञान
* तीसरे " सम्यग्चारित्र
* जो चार कोने है वह अंनत चतुष्टय है
* अन्तिम पड़ाव मोक्ष

(1)

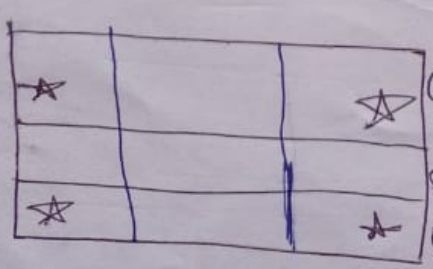

(2) सम्यग्दर्शन पहली पंक्ति
(3) दूसरी पंक्ति सम्यग्ज्ञान
(4) तीसरी सम्यग्चारित्र
(1) ★ अनन्त चतुष्टय

सं.क्र.	विषय	परिभाषा
1	जिन	जिसने मोह-राग द्वेष और इन्द्रियो को जीत लिया है।
2	भव्य	जिसमे मोक्ष जाने की पात्रता हो उसे भव्य कहते है।
3	अभव्य	जिसमे मोक्ष जाने की पात्रता नही हो वह अभव्य है।
4	मिथ्यात्व	उल्टी मान्यता को मिथ्यात्व कहते है।
5	क्षमा	क्रोध का अभाव क्षमा है।
6	अनुजीवी गुण	भावस्वरूपी गुण को अनुजीवी गुण कहते है।
7	प्रतिजीवी गुण	वस्तु के अभाव स्वरूपी धर्म को प्रतिजीवी गुण कहते है।
8	द्रव्यसंग्रह	आचार्य नेमिचन्द्र द्वारा लिखित ग्रन्थ
9	समयसार ग्रन्थ	आचार्य कुन्दकुन्द का प्रसिद्ध ग्रन्थो मे से एक
10	प्रवचनसार	आचार्य कुन्दकुन्द का प्रसिद्ध ग्रन्थ
11	मोक्षमार्ग प्रकाशक	आचार्यकल्प पं. टोडरमल जी द्वारा लिखित प्रसिद्ध ग्रन्थ
12	आप्तमीमांसा	आचार्य समन्तभद्र का प्रसिद्ध न्याय ग्रन्थ
13	मोक्षशास्त्र	आचार्य उमास्वामी द्वारा लिखित संस्कृत भाषा का प्रथम जैनग्रन्थ
14	छहढाला	दौलतराम जी द्वारा लिखित महान ग्रन्थ
15	पञ्चपरमागम	समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, अष्टपाहुड, पंचास्तिकाय
16	गिरनार जी	यहाँ से नेमिनाथ भगवान ने मुक्ति प्राप्त की थी
17	सम्मेदशिखर जी	यहाँ से बीस तीर्थंकरो ने मुक्ति प्राप्त की थी
18	पावापुर	महावीर भगवान ने मुक्ति प्राप्त की थी
19	कैलाशगिरि	आदिनाथ भगवान ने कैलाशगिरि से मोक्ष प्राप्त किया
20	चम्पापुर	वासुपुज्य भगवान ने चम्पापुर से मोक्ष प्राप्त किया
21	दीपावली	इस दिन भगवान महावीर को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी।
22	रक्षाबन्धन	इस दिन मुनि विष्णुकुमार ने सात सौ मुनिराजो की रक्षा मे निमित्त बने
23	अक्षय तृतीया	इस दिन मुनि ऋषभदेव को सर्वप्रथम आहार प्राप्त हुआ था
24	श्रुतपञ्चमी	इस दिन प्रथम श्रुतस्कन्ध की रचना पूर्ण हुई थी

25 to 49

25	अष्टान्हिका	इन दिनों नन्दीश्वर द्वीप के जिनालयों की विशेष पूजन की जाती है।
26	अर्द्धकथानक	पं. बनारसीदास जी द्वारा लिखित हिन्दी साहित्य की प्रथम आत्मकथा
27	अयोध्या	चौबीसों तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि।
28	निमित्त	कार्य की उत्पत्ति में जिस पर अनुकूल होने का आरोप आये
29	कर्म	आठ होते हैं।
30	परमेष्ठी	जो परम पद में स्थित हो
31	अरहन्त	जो चार घातिया कर्मों का अभाव करते हैं
32	सिद्ध	जो घातियाऔर अघातिया कर्मों का अभाव करते हैं
33	आचार्य	जो मुनिसंघ के नायक होते हैं।
34	उपाध्याय	जो संघ में पठन-पाठन के अधिकारी हैं।
35	साधु	जो रत्नत्रय की आराधना करते हैं।
36	तीर्थंकर	जो धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करते हैं।
37	मंगल	जो पापों को गलाये एवं सच्चासुख उत्पन्न करे।
38	उत्तम	जो लोक में महान हो
39	शरण	सहारे को शरण कहते हैं।
40	भगवान	जो वीतरागी एंव सर्वज्ञ हों।
41	सच्चा देव	जो वीतरागी, सर्वज्ञ एवं हितोपदेशी हो
42	जिनवाणी	सच्चे देव की वाणी को जिनवाणी कहते हैं
43	सम्यग्दर्शन	सात तत्वों का श्रद्धान करना
44	सम्यग्ज्ञान	वस्तु का जैसा स्वरूप है वैसा जानना
45	सम्यक्चारित्र	रागादि का परिहार करना अथवा आत्मलीनता
46	रत्नत्रय	सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र ये ही रत्नत्रय हैं
47	विश्व	छह द्रव्यों के समूह को विश्व कहते हैं।
48	द्रव्य	गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं।
49	गुण	जो द्रव्य की सम्पूर्ण भागो और उसकी सम्पूर्ण अवस्थाओ मे पाया जाए

50	पर्याय	गुणो के परिणमन को पर्याय कहते है।
51	जीव द्रव्य	जिसमे ज्ञान दर्शन पाया जाये वह जीव द्रव्य है
52	पुद्गल	जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध वर्ण पाया जाये वह पुद्गल है।
53	धर्म	जो स्वयं चलते हुए जीव और पुद्गलो के चलने मे निमित्त हो उसे धर्म द्रव्य कहते है।
54	अधर्म	जो गमनपूर्वक ठहरते हुए जीव और पुद्गलो के ठहरने मे निमित्त हो
55	आकाश	जो सब द्रव्यो के अवगाहन मे निमित्त हो
56	काल	जो सब द्रव्यो के परिणमन मे निमित्त हो
57	तत्व	जो वस्तु जैसी है उसका जो भाव है उसे तत्व कहते है, वह सात होते है।
58	कषाय	जो आत्मा को कसे अर्थात दुःख दे उसे कषाय कहते है
59	हिंसा	किसी जीव को मारना, सताना या उसका दिल दुखाना हिंसा है।
60	झूठ	जैसा देखा, जाना और सुना हो वैसा न कहकर अन्यथा कहना
61	मान	घमण्ड को ही मान कहते है।
62	चोरी	किसी की पड़ी हुई रखी हुई, भूली हुई वस्तु को बिना उसकी आज्ञा के उठा लेना
63	परिग्रह	अनाप सनाप रुपया पैसा जोड़ना परिग्रह है
64	पाप	दुःख का कारण बुरा कार्य ही पाप है, वह पाँच होते है।
65	क्रोध	गुस्से को क्रोध कहते है
66	माया	छलकपट को ही माया कहते है
67	लोभ	लालच को लोभ कहते है।
68	अष्ट द्रव्य के नाम	जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल
69	कुशील	पराई माँ बहन को बुरी नजर से देखना
70	राग	किसी वस्तु को भला जानकर प्राप्त करने की इच्छा करना
71	द्वेष	किसी वस्तु को बुरा जानकर दूर करना
72	मोह	ममत्व को मोह
73	बहिरात्मा	शरीर और आत्मा को एक माननेवाला जीव बहिरात्मा
74	अंतरात्मा	शरीर और आत्मा को भिन्न जानना

75	परमात्मा	पूर्ण निराकुल सुखी जीव को परमात्मा कहते हैं
76	ज्ञानावरणी	ज्ञान पर आवरण डालने वाला कर्म को ज्ञानावरणी कर्म कहते है।
77	दर्शनावरणी	दर्शन पर आवरण डालने वाले कर्मों को दर्शनावरणी कर्म
78	मोहनीय	जीव अपने स्वरूप को भूलकर अन्य को अपना माने तब जिस कर्म का उदय निमित्त हो
79	अंतराय	दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य के विघ्न मे जिस कर्म का उदय निमित्त हो
80	आयु	जीव अपनी योग्यता से जिस शरीर मे रुका रहे मे जिस कर्म का उदय निमित्त हो
81	नाम	जिस शरीर मे जीव हो उस शरीर की रचना में जिस कर्म का उदय निमित्त हो
82	गोत्र	जीव को उच्च या नीचा आचरण करने वाले कुल मे पैदा होने में जिस कर्म का उदय निमित्त हो
83	वेदनीय	जीव के अनुकूलता प्रतिकूलता रूप संयोग प्राप्त होने मे जिस कर्म का उदय निमित्त हो
84	सच्चा सुख	जो जीव इन पाँचो परमेष्ठी को पहिचान कर उनके बतार हुए मार्ग पर चलता है
85	मूलमंत्र	सभी मंत्रो का मूल होने से णमोकार मंत्र को मूलमंत्र कहते है।
86	अघाति कर्म	जो आत्मा के अनुजीवी गुणो के घात मे निमित्त न हो उन्हे अघाति ...
87	अपराजित मंत्र	ऐसा मंत्र जो कभी भी किसी से भी पराजित न हो
88	पंचनमस्कार मंत्र	जिस मंत्र मे पाँचो परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है।
89	गति	जीव की अवस्था विशेष को गति कहते है!
90	मनुष्य गति	जब कोई जीव कही से मरकर मनुष्य शरीर धारण करता है उसे ...
91	अनादिनिधन मंत्र	ऐसा मंत्र ~~जिसका~~ जो अनादि से है और जिसका कभी अंत न हो
92	देवगति	जब कोई जीव मरकर देव शरीर धारण करता है उसे देवगति कहते है
93	तिर्यञ्चगति	जब कोई जीव मरकर तिर्यंच शरीर धारण करता है उसे तिर्यञ्चगति कहते है
94	नरक गति	जब कोई जीव मरकर नरक शरीर धारण करता है उसे नरकगति कहते है
95	संज्ञी	जो जीव पाँच इन्द्रिय और मन सहित हो वह संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव है।
96	असंज्ञी	जो जीव पाँच इन्द्रिय और मन रहित हो वह असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव है।
97	गृहीत मिथ्यात्व	जो मिथ्यात्व अभी नवीन ग्रहण किया गया हो वह गृहीत मिथ्यात्व है।
98	अगृहीत मिथ्यात्व	जो मिथ्यात्व बिना सीखे ही अनादिकाल से इस जीव के साथ चल रहा है
99	विभाव	आत्मा के स्वभाव के विपरीत भाव को विभाव कहते है।

100 to 120

100	घाति	जो जीव के अनुजीवी गुणो का घात करने मे निमित्त हो
101	धर्म	वस्तु के स्वभाव को धर्म कहते है।
102	आश्रव	ज्ञानावरणादि कर्मो का स्वयं आना आश्रव है
103	अजीव	ज्ञान दर्शन स्वभाव से रहित पदार्थ को अजीव तत्व कहते है
104	संवर	नये कर्मो का स्वयं आना रुक जाना संवर है
105	बंध	कर्मो का आकर बंध जाना
106	निर्जरा	कर्मो का एकदेश रूप से खिर जाना
107	मोक्ष	समस्त कर्मो का सर्वथा नाश हो जाना
108	उपयोग	ज्ञान दर्शन के व्यापार को उपयोग कहते है।
109	अनुयोग	शास्त्रो के कथन करने की पद्धति को अनुयोग कहते है।
110	प्रथमानुयोग	तीर्थंकर चक्रवर्ती आदि महान पुरुषो के चारित्र का जिसमे निरूपण किया हो
111	चरणानुयोग	गृहस्थ व मुनि के आचरण नियमो का वर्णन होता है।
112	द्रव्यानुयोग	षट् द्रव्य सप्त तत्वादिक का व स्व-पर भेद विज्ञान आदि का जिसमे निरूपण हो
113	करणानुयोग	गुणस्थान, मार्गणास्थान आदि व कर्मो तथा तीनलोक संबधी वर्णन होता हो
114	अभाव	एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ मे अस्तित्व न होने को अभाव कहते है।
115	प्रागभाव	एक द्रव्य की वर्तमान पर्याय का दूसरी द्रव्य की पूर्व पर्याय मे अभाव
116	प्रध्वंसाभाव	एक द्रव्य की वर्तमान पर्याय का आगामी पर्याय मे अभाव
117	अन्योन्याभाव	एक पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय का अन्य पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय मे अभाव
118	अत्यन्ताभाव	एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य मे अभाव
119	ब्रह्मचर्य	निज शुद्धात्मा मे चरना, रमना ही ब्रह्मचर्य है।
120	सत्पुरुष	जो त्रिकाली ध्रुवस्वरूप निजआत्मा का स्वरूप बतावे वा उसी के शरण लेने को कहे वही सत्पुरुष है

121	उत्तम क्षमा धर्म को धारूँ क्रोध कषाय विनाश करूँ	उत्तम क्षमा
122	सीमन्धर भगवान	भव समुद्र सीमित किये सीमंधर भगवान, कर सीमित निज ज्ञान को प्रगटयो पूरन ज्ञान
123	द्वादशांग	द्वादशांग वाणी के नायक श्री जिन को मै नमन कराय
124	वीतराग	वीतराग सर्वज्ञ हितंकर भविजन कि अब पूरो आस, ज्ञान भानु का उदय करो मम मिथ्यातम का होय विनाश
125	समयसार	है समयसार बस एक सार, है समयसार बिन सब असार
126	अनित्य	द्रव्य रूप करि सर्व थिर ~~परजय थिर करे~~ गौं। परजय थिर है कौन। द्रव्य दृष्टि आपा लखो, परजय नय करि गौन ॥
127	अशरण	शुद्धातम अरु पंच गुरु जग मे सरनौ दोय, मोह उदय जिय के वृथा, आन कल्पना होय ॥
128	धर्म भावना	दर्शज्ञानमय चेतना आतमधर्म बखानि, दयाक्षमादिक रतनत्रय, यामे गर्भित जानि ॥
129	बोधिदुर्लभ	बोधि आपका भाव है, निश्चय दुर्लभ नाहि। भव मे प्रापति कठिन हैं, यह व्यवहार कहाहि ॥
130	निर्जरा भावना	संवरमय है आतमा पूर्व कर्म झड़ जाय। निज स्वरूप को पायकर, लोक शिखर जब थाय।
131	पंचबालयति	वासुपूज्य, मल्लीनाथ, नेमीनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर
132	दशलक्षण धर्म	आत्मस्वभाव की प्रतीतिपूर्वक चारित्र की दश प्रकार से आराधना करना